७५ अस्तित्व ही सह–अस्तित्व

आज दिनांक **०३ मार्च २०१३**

सहअस्तित्व स्वयं अपने स्वरूप में व्यापक रूपी सत्ता में सम्पृक्त सम्पूर्ण प्रकृति ही है | प्रकृति ही चारों अवस्था में दृष्टिगोचर है | १-पदार्थावस्था २-प्राणावस्था ३-जीवावस्था ४-ज्ञानावस्था | पदार्थावस्था में मृद् , पाषाण, मणि, धातु के रूप में वस्तुएं देखने को मिलती हैं | इनका होना सर्वप्रथम आवश्यकता रही | इन्हीं में विकास क्रम-विकास, जागृति क्रम-जागृति का अध्ययन है | किसी भी धरती पर देखा जाय ऐसा ही आंकलन बनता है | ऐसा आंकलन के साथ आगे चलने से प्राणावस्था, जीवावस्था और ज्ञानावस्था का प्रकटन होता है | प्रकटन होना प्राकृतिक है | इसी को होने के रूप में प्राकृतिक बताया है, रहने के रूप में स्वयंस्फूर्त | चारों अवस्था में से मानव को छोड़ करके सभी प्राकृतिक रूप में अपने-अपने आचरण करते ही हैं | मानव का आचरण अभी तक पता नहीं लगा | जंगल युग से अत्याधुनिक युग तक इतिहास बन चुकी है | ऐसा अध्ययन करने की इच्छा रखने वाला केवल मानव ही है, शेष तीनों अवस्था में अध्ययन की प्रवृत्ति नहीं है, जीने का प्रवृत्ति है | इसी क्रम में पदार्थावस्था में मृद् ,पाषाण, मणि,धातु में आचरण स्पष्ट है | पदार्थावस्था में ही विकास क्रम का शुरुआत हुई |

प्राणावस्था में अनेक प्रकार की रचनाएं बनी | घास, पौधा, झाड़ी, जंगल, वृक्ष, बड़े वृक्ष, छोटे वृक्ष के रूप में होना अपन देख पाते हैं | होने का स्वरूप आदिकाल से ही प्राकृतिक है | इसी जंगलों में जीवों का प्रादुर्भाव हुआ | अनेक प्रकार के जीव तैयार हुए | इन जीवों में शाकाहारी, माँसाहारी हुए | मानव जीवों के सदृश जीते हुये जीवों से अच्छा जीने के लिये प्रयास किया जिसमें से सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा के रूप में मनुष्य पाने के लिये कोशिश किया | सफल हो गया | सामान्याकाँक्षा के रूप में आहार, आवास, अलंकार को पहचाना जा सकता है | इनकी सभी मानव को समान रूप में आवश्यकता है | महत्वाकांक्षा के रूप मे किसी को कम, किसी को ज्यादा आवश्यकता है | सुविधा के रूप में महत्वाकांक्षा की वस्तुएं, आवश्यकता के रूप में सामान्याकांक्षा की वस्तुओं को पहचाना जाता है | इस क्रम विधि को जागृति क्रम-जागृति कहा है, नाम है | ये पूरी बात को समझना ही जागृति है | समझने का प्रमाण ही परम्परा है अन्यथा समुदाय है | अत्याधुनिक विधि क्रम में मानव दिखता है | क्रम सामान्याकांक्षा, महत्वाकांक्षा को प्राप्त करने के अर्थ में ही है | इस क्रम में सम्पूर्ण जागृति न होने के फलस्वरुप पुनर्विचार करना पड़ा | अभी तक दो प्रकार का विचार गुजर चुकी है- १-आदर्शवाद २-भौतिकवाद |

आदर्शवाद के अनुसार ईश्वर सब कुछ करता है | करने वाला ईश्वर है | ईश्वर का स्वरूप स्पष्ट न होने के आधार पर भौतिकवाद तैयार हुआ | भौतिकवाद के अनुसार वस्तु ही अनेक रूप में होते हैं | इस क्रम में सम्पूर्ण जागृति न होने के फलस्वरूप पुनर्विचार करना पड़ा | इसमें मुख्य रूप में न्याय को पहचानने का अपेक्षा बनी | यह स्पष्ट न होने के फलस्वरूप पुनर्विचार की आवश्यकता रही | इसी क्रम में विकल्प प्रस्तुत हुआ | वस्तुओं की प्रधानता के होते हुए न्याय पाना सम्भव नहीं है | विकल्प विधि से सहअस्तित्व ही सम्पूर्ण स्वरूप, पदार्थ के बगैर सत्ता का ज्ञान करने वाला कोई नहीं | सत्ता में प्रकृति सम्पृक्त रहने से डूबा, भींगा, रहना स्वाभाविक रहा | यही मूल रूप में सम्पूर्ण पदार्थ ऊर्जा सम्पन्न रहने का अर्थ हुआ | यह यदि समझ में आता है, मूलतः वस्तु अपने में कैसा, विकास क्रम-विकास को प्रकट करता है | जागृति क्रम-जागृति को कैसा प्रकट करता है,यह समझ में आता है | विकास क्रम-विकास प्राकृतिक है | इसमें मनुष्य का हाथ नहीं है | जागृति क्रम-जागृति के

रूप में केवल मनुष्य ही एकमात्र आधार है | जागृति क्रम में जीते हुये जीवों से अच्छा जीने के स्वरूप में है | जागृति, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना के रूप में विकसित चेतना क्रम के स्वरूप में विकल्प विधि से स्पष्ट हुई है | इस पद्धति से सोचने से- होने के रूप में प्रकृति सहअस्तित्व रूप में स्पष्ट है | रहने के रूप में विकसित चेतना ही एकमात्र रास्ता है | विकसित चेतना विधि से जीने के क्रम में मानव ही दिखाई पड़ते हैं | विकसित चेतना का शुरुआत ही मानव चेतना है, यह स्पष्ट होता है | इसे समझना इसलिये आवश्यक हो गया कि विकास क्रम में ही अर्थात जीव चेतना में जीते हुये जीवों से अच्छा जीने के क्रम में ही न्याय, धर्म, सत्य की अपेक्षा बन चुकी है |

न्याय, धर्म, सत्य में पारंगत होना तभी सम्भव है, जब विकसित चेतना मानव परम्परा में सर्व सुलभ हो जाय | इस विधि से इतिहास को पाते हैं तब विकल्प की आवश्यकता महसूस होता है | सुविधा, संग्रह विधि से आवश्यकता महसूस नहीं होता है | सुविधा, संग्रह विधि से केवल लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्माद ,संघर्ष, युद्ध ही हाथ लगता है | इस विधि से हम विकसित चेतना को कभी समझ नहीं पाते, समुदाय विकसित चेतना होता नहीं | इसको हम भली प्रकार से अध्ययन कर सकते हैं |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**